बारहमासा

माँ कहती आषाढ़ आया है
काले काले मेघ घिर रहे,
रिमझिम बूंदे बरस रही हैं
मोर नाचते हुए फिर रहे।

फिर यह तो सावन के दिन हैं
राखी भी आई चमकीली,
नन्हें को राखी बांधी है
मां ने दी है चुन्नी नीली।

भादों ने बिजली चमका कर
गरज गरज कर हमें डराया,
क्या हमने चांई मांई कर
इसीलिए था इसे बुलाया।

गन्ने चटका कर माँ
किन देवों को जगा रही है,
ये कुँवार तक सोते रहते
क्या इनको कुछ काम नहीं है।

दिये तेल सब रामा लाया
हमने मिल बत्तीयाँ बनाई
कातिक में लक्ष्मी की पूजा
करके दीपावली जलाई।

माँ कहती अगहन के दिन हैं
खेलों पर तुम दूर न जाना
हमको तो अपनी चिड़ियाँ की
खोज खबर है लेकर आना।

पूस मास में सिली रजाई
निक्की रोजी बैठे छिप कर,
रामा देख इन्हें पाएगा
कर देगा इन सबको बाहर।

माघ मास सर्दी के दिन हैं
नहा नहा हम कांपें थर थर,
पर ठाकुर जी कभी न कांपे
उन्हें नहीं क्या सर्दी का डर।

फागुन आया होली खेली
गुझियाँ खाई जन्म मनाया,
क्या मैं पेट चीर कर निकली
या तारों से मुझे बुलाया।

चैत आ गया चैती गाओ
माँ कहती बसन्त आया है,
नये नये फूलों पत्तों से
बाग हमरा लहराया है।

अब बैशाख आ गई गर्मी
खेलेंगे हम फव्वारों से,
बादल अब न आएंगे हमकों
ठंडा करने बौछारों से।

माँ कहती अब जेठ तपेगा
निकलो मत घर बाहर दिन में,
हम कहते गोरइयाँ प्यासी,
पानी तो रख दें आँगन में।

बाबू जी कहते हैं इनको
नया बरस है पढ़ने भेजो,
माँ कहतीं ये तो छोटे हैं
इन्हें प्यार से यहीं सहेजों।

हम गुपचुप गुपचुप कहते हैं।
हमने तो सब पढ़ डाला है,
और पढ़ाएगा क्या कोई
पंडित कहाँ, कहाँ शाला है?

– महादेवी वर्मा